प्रचलित शिक्षा के विकल्प के रूप में छत्तीसगढ़ में चेतना विकास मूल्य शिक्षा

मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद के प्रकाश में

प्रचलित शिक्षा का विकल्प : चेतना विकास मूल्य शिक्षा

उद्देश्य

- अभिभावक विद्यालय (सर्वसुलभ स्वावलंबी शिक्षा) बनाना
- शिक्षित बेरोजगारी से मुक्ति
- विश्व से अपराध मुक्ति
- सार्वभौम मानवीय आचरण सम्पन्न मानव तैयार करना
- मानवीय शिक्षा से समग्र विकास (अखण्डसमाज सार्वभौमव्यवस्था)
- विश्वासपूर्वक जीने की योग्यता सम्पन्न करना
- मानव स्वयं में समाधान पूर्वक, परिवार में समृद्धि पूर्वक, समाज में भयमुक्त व प्रकृति के साथ तालमेल (संतुलन) पूर्वक जीने की योग्यता से सम्पन्न करना।
- 20 वर्ष की शिक्षा पूर्ण कर मानव उत्सवपूर्वक जी सके, ऐसी योग्यता विकसित करना

वर्तमान परिदृश्य

- मानव के जीने का लक्ष्य स्पष्ट नहीं है।
- मानव में घुटन, परिवार में टूटन, समाज में विघटन तथा प्रकृति में असंतुलन व प्रदूषण व्याप्त है।
- युवावर्ग विश्वासपूर्वक जी पानेमें स्वयं को समर्थ नहीं पा रहा है।
- शिक्षित होने के बाद शारीरिक श्रम करने की क्षमता में अभाव पैदा हो रहा है।
- आजीवन धन–अर्जन के बावजूद मानव, आर्थिक असुरक्षा से मुक्त नहीं है।

वर्तमान परिदृश्य

- मानव, परिवारमें आजीवन संबंधों में जी पाने में सक्षम नहीं है।
- महंगी शिक्षा के बाद भी संतान से आजीवन मधुर संबंध की अपेक्षा नहीं है।
- उम्र बढ़ने के साथ मानव का अकेलापन बढ़ रहा है।
- गलती को गलती से तथा अपराध को अपराध से रोकने का तरीका फल–फूल रहा है।

वर्तमान परिदृश्य – ग्लोबल वार्मिंग एवं फैमिली वार्मिंग

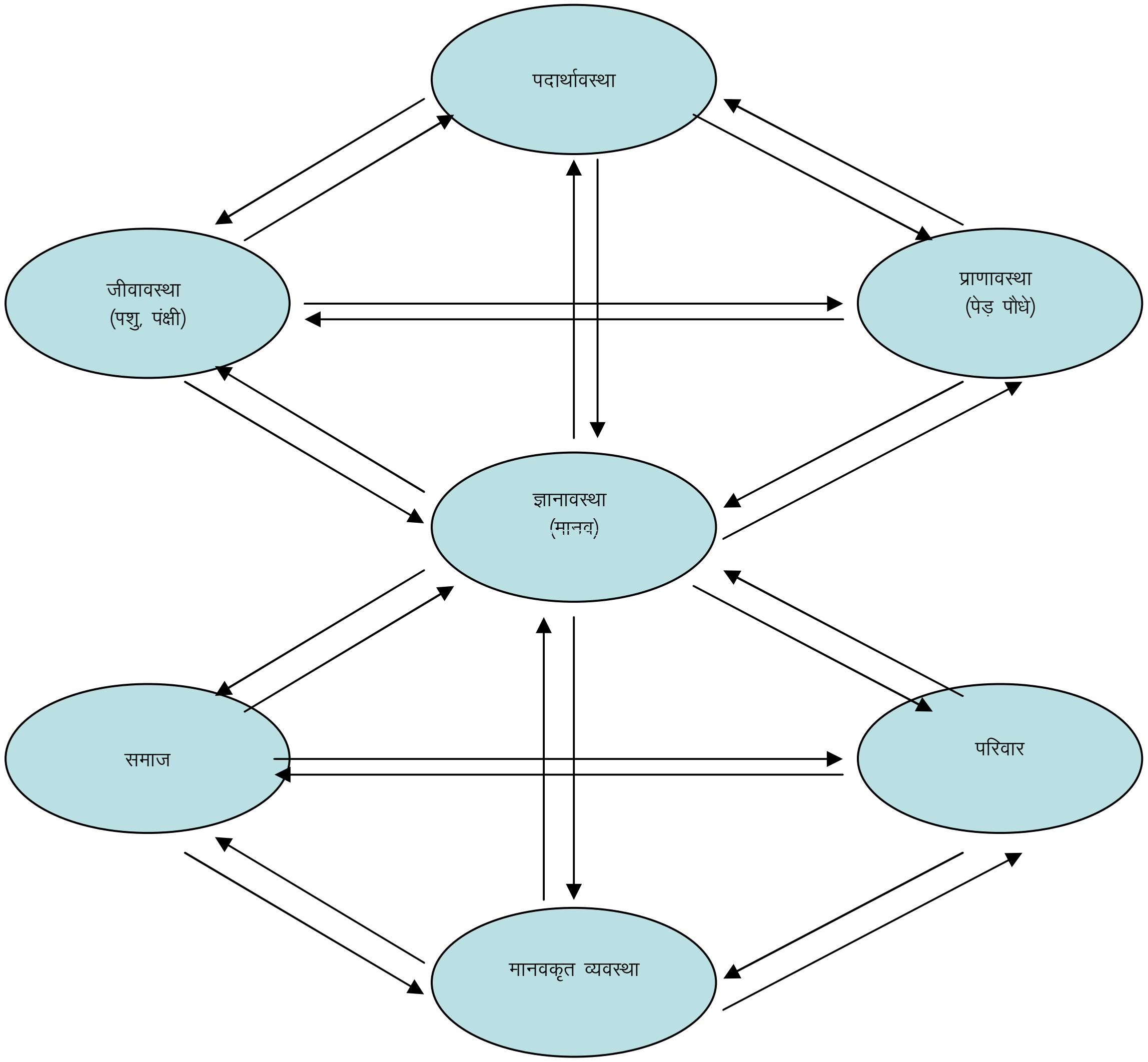

वर्तमान परिदृश्य के मूल कारण

- **भ्रमित मानसिकता**
- धन ही सब कुछ है।
- इंद्रियों में ही सारा सुख है।
- सुविधा (अधिकतम और आधुनिकतम) ही जीवन शैली है।
- **भ्रमित मानसिकता का स्त्रोत**

प्रचलित अर्थशास्त्र

- आवश्यकताएँ असीम है, साधन सीमित हैं – राबिन्सन

असुरक्षा → भय → संग्रह → शोषण → विरोध

(नक्सलवाद, आंतकवाद, अव्यवस्था)

युद्ध एवं संघर्ष

लाभोन्मादी अर्थशास्त्र = अव्यवस्था = दुख

प्रचलित मनोविज्ञान

- मानव के समस्त क्रियाकलाप का केन्द्र ''काम'' है – फ्रायड
- कामोन्मादी मनोविज्ञान = अव्यवस्था = दुख

प्रचलित समाजशास्त्र (हर्बर्ट स्पेन्सर)

- अतिबलशाली ही जियेगा – डार्विन
- भोगोन्मादी समाजशास्त्र = अव्यवस्था = दुख

भ्रमित मानसिकता से उत्पन्न स्थितियाँ

- गांव – हीनता(स्वयं, पालक, गांव, भाषा, वेशभूषा के प्रति)
- शहर– प्रदूषण, नशा, यौन अपराध,गलाकाट प्रतिस्पर्धा आदि
- शिक्षित वर्ग – श्रमविहीन अधिकतम धन
- व्यवस्था तंत्र –

♦ कार्यपालिका – गलती को गलती से रोकना

♦ न्यायपालिका – अपराध को अपराध से रोकना

♦ सीमा सुरक्षा बल – युद्ध को युद्ध से रोकना

समाधान

- मानव मूलतः गलती करना नहीं चाहता है।
- लेकिन वह भौतिक आवश्यकता की पूर्ति चाहता है।
- साथ ही सम्मानित एवं सफल होना चाहता है।
- शिक्षा परम्परा पूरे विश्व में कहीं भी हो वह मानव को अपनी आवश्यकताऐं पहचानने में समर्थ नहीं बना सकी।
- आवश्यकता (दो प्रकार की) –
- भौतिक आवश्यकता → शरीर के लिए → श्रम पूर्वक उत्पादन

स्वयं में विश्वास, श्रेष्ठता का सम्मान, संबंधो में विश्वास, भयमुक्त समाज, विश्व शांति → मेरे लिए → सही समझ एवं सही व्यवहार

भ्रमवश

- सामान से सम्मान
- सुविधा से स्वयं में विश्वास/सम्मान, संबंधो में विश्वास/निरंतर सुख पाने का प्रयास

कैसे ठीक होगा ?

- लाभोन्मादी अर्थशास्त्र के स्थान पर आर्वतनशील अर्थशास्त्र
- कामोन्मादी मनोविज्ञान के स्थान पर मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान
- लाभोन्मादी समाजशास्त्र के स्थान पर व्यवहार वादी समाज शास्त्र

उपलब्धि

- स्वयं में विश्वास
- संबंधों में विश्वास
- स्वस्थ शरीर
- अपराध मुक्त मानसिकता
- प्रकृति का पोषण करते हुए भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति
- भयमुक्त समाज

↓

वसुधैव कुटुम्बकम

चेतना विकास मूल्य शिक्षा पर आधारित ''जीवन विद्या'' का प्रदेश में फैलाव

- दिनांक 25 दिसम्बर 1999 को दुर्ग जिले के धमधा विकासखण्ड के ग्राम अछोटी में अभ्युदय संस्थान की स्थापना।
- तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिए जीवन विद्या सूचना शिविरों का आयोजन संस्थान में किया गया जिसके सार्थक परिणाम प्राप्त हुए।
- स्कूली शिक्षा में प्रयोग के तौर पर डाइट बेमेतरा में सेवाकालीन शिक्षकों के बीच जीवन विद्या की सूचना।
- नारधा संकुल,विकासखंड–धमधा, जिला–दुर्ग के शिक्षकों के साथ शिक्षा के विकल्प के रुप में जीवन विद्या का प्रस्ताव रखा गया। पूर्व माध्यमिक शाला मुरमुंदा में बच्चों के साथ चेतना विकास व मूल्य शिक्षा की चर्चा प्रारंभ हुई जो अब तक जारी है।

- पूर्व राष्ट्रपति महामहिम डा.अब्दुल कलाम द्वारा जीवन विद्या के फैलाव की सराहना की गई।
- जिले के कलेक्टर व जिला शिक्षा अधिकारियों ने इस स्कूल का अवलोकन किया तथा सराहना की।
- विकासखण्ड स्तरीय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला में अभ्युद्य संस्थान के प्रबोधकों द्वारा जीवन विद्या संबंधी प्रेरक चर्चाओं का समावेश किया गया।

शिक्षा विभाग से संपर्क की प्रक्रिया

।

- 06 नवम्बर 2007 को माननीय मुख्यमंत्री के निवास में मुख्यमंत्री डॉ.रमन सिंह की बाबा ए.नागराज जी से मुलाकात एवं 07 नवम्बर 2007 को माननीय मुख्यमंत्री डा.रमन सिंह जी के निर्देश पर शिक्षा सचिव श्री नंदकुमार जी का अभ्युद्‌य संस्थान अछोटी जाकर विद्या की भूमिका पर चर्चा करना।
- 09 नवम्बर 2007 को शिक्षा सचिव के निवास पर बाबा ए. नागराज व शिक्षा सचिव श्री नंदकुमार जी की विद्या पर विस्तृत चर्चा।

- 29 नवम्बर 2007 से 05 दिसम्बर 2007 तक सात दिवसीय परिचय शिविर का आयोजन अभ्युद्य संस्थान अछोटी में किया गया जिसमें प्रदेश के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के व्याख्याता व शिक्षकों सहित 39 प्रतिभागी शामिल हुए, अंतिम दिवस मूल्यांकन अवसर पर शिविरार्थियों ने शिक्षा सचिव की उपस्थिति में इसकी काफी सराहना करते हुए प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक बताया।

- 22.12.2007 से 28.12.2007 तक सात दिवसीय शिविर में स्वयं शिक्षा सचिव श्री नंदकुमार जी उपस्थित रहे तथा इसकी प्रभाविता को परखा एवं इसके विषयवस्तु को सार्थक पाया।

- शिक्षा सचिव द्वारा प्रदेश में सफल क्रियान्वयन हेतु शिक्षा विभाग के राज्य, जिला व विकासखण्ड स्तर के अधिकारियों हेतु 7 दिवसीय जीवन विद्या परिचय शिविर का आयोजन किया गया।
- चेतना विकास मूल्य शिक्षा की मूल अवधारणा को मैदानी स्तर तक ले जाने हेतु एस.सी.ई.आर.टी. में स्थापित एडूसेट के माध्यम से प्रदेश के 1200 हायर सेकेण्डरी स्कूलों के प्राचार्यों एवं सर्व शिक्षा अभियान से जुड़े 1256 संकुल समन्वयकों व प्रभारियों हेतु 7 दिवसीय परिचय शिविर का प्रसारण किया गया।

- अभ्युद्य संस्थान अछोटी में विभागीय कर्मचारियों एवं शिक्षकों हेतु माह में कम से कम दो परिचय शिविर का आयोजन किया गया।

- शिक्षा विभाग के 4000 अधिकारियों/कर्मचारियों एवं शिक्षकों तक सात दिवसीय सूचना शिविर एवं एडुसेट के माध्यम से नवम्बर 2007 से दिसम्बर 2008 तक चेतना विकास मूल्य शिक्षा की अवधारणा पहुंचाई गई।

चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रभाव

- परिचय शिविर में शामिल होने के उपरांत सभी लोगों ने इसे सबके लिए उपयोगी बताया। शिविर में विभिन्न संप्रदायों को मानने वाले लोग शामिल थे, सबने स्वीकार किया कि इसे पाठ्यक्रम में शामिल किया जावे।
- प्रदेश के दो लाख शिक्षकों एवं 58 लाख बच्चों तक जीवन विद्या की अवधारणा को पहुंचाने हेतु विभाग में प्रबोधक तैयार करने की आवश्यकता महसूस की गई।

- विभाग के शिक्षकों को विद्या में पारंगत करने के उद्देश्य से 20 फरवरी 2009 से 22 मार्च 2009 तक एक माह के अध्ययन शिविर का आयोजन अभ्युद्य संस्थान, अछोटी में किया गया जिसमें स्वयं के व्यय से 26 शिक्षकों ने स्वस्फूर्त भाग लेकर विकल्प, अध्ययन बिंदु, जीवन विद्या एक परिचय तथा मानव व्यवहार दर्शन का अध्ययन किया।
- अध्ययन में उनकी उत्सुकता को देखकर विभाग द्वारा चेतना विकास मूल्य शिक्षा में पारंगत होने एवं 13 वांगमय के अध्ययन हेतु छः माह का अध्ययन शिविर दिनांक 15.07.09 से अभ्युद्य संस्थान, अछोटी में आयोजित की गई, जो 20.01.2010 तक चलेगी।

- दो समूहों में संचालित अध्ययन शिविर की उपलब्धियाँ निम्नानुसार है–

प्रथम चरण–	I समूह	मानव व्यवहार दर्शन एवं कर्मदर्शन का अध्ययन
	II समूह	विकल्प, अध्ययन बिंदु एवं जीवन विद्या एक परिचय का अध्ययन
द्वितीय चरण–	I समूह	मानव अभ्यास दर्शन, अनुभव दर्शन का अध्ययन
	II समूह	मानव व्यवहार दर्शन का अध्ययन

- देश भर से कुल 60 शिक्षक/स्वयं सेवी स्वयं की सहमति से अध्ययन शिविर में शामिल हुए हैं जिसमें 20 दिन संस्थान में रहकर अध्ययन का कार्य तथा 10 दिन विभिन्न संस्थानों में परिचय शिविरों द्वारा स्वमूल्यांकन करते हुए अपनी अध्ययन गति बढ़ा रहे हैं।
- छः माह के अध्ययन शिविर में शामिल प्रतिभागियों (कुल 60) का विवरण निम्नानुसार है –

(A)	छत्तीसगढ़ स्कूल शिक्षा विभाग	51
(B)	अन्य विभाग	01
(C)	उत्तरप्रदेश स्कूल शिक्षा विभाग	02
(D)	महाराष्ट्र स्कूल शिक्षा विभाग	02
(E)	मध्यप्रदेश अन्य विभाग (स्वयं सेवी)	01
(F)	पश्चिम बंगाल (स्वयं सेवी)	01
(G)	दिल्ली (स्वयं सेवी)	02

- इन शिविरार्थियों द्वारा प्रदेश के सभी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों यथा उन्नत शिक्षण संस्थान, शिक्षा महाविद्यालय, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बुनियादी प्रशिक्षण संस्थान में दिनांक 6–12 अगस्त 2009 तक अध्ययनरत् 1701 छात्राध्यापकों व 57 शिक्षकों हेतु 7 दिवसीय जीवन विद्या परिचय शिविरों में प्रबोधन कार्य किया गया। कुल 27 केन्द्रों में शिविर आयोजित किए गए।
- इसी बीच नक्सल प्रभावित बीजापुर एवं दंतेवाड़ा के 169 शिक्षकों का भी शिविर निरंजन धर्मशाला, रायपुर में आयोजित किया गया।
- शिविरार्थियों द्वारा स्वयं के विद्यालय में तथा आसपास के विद्यालयों में दिनांक 07 से 12 सितम्बर 2009 तक 7 दिवसीय जीवन विद्या परिचय शिविर का आयोजन किया गया जिसमें विद्यालयीन छात्र व शिक्षक शामिल हुए। कुल 5650 विद्यार्थी घंटा इसमें लगा।

- इन सभी परिचय शिविरों में शिविरार्थियों ने इसे पाठ्यक्रम में शामिल करने की तथा प्रशिक्षण संस्थानों में समय–समय पर इस शिविर के आयोजन की मांग की।
- शिविरार्थियों ने अब तक की अपनी सारी उम्र में इस सात दिन को महत्वपूर्ण मानते हुए प्रबोधकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।
- अभ्युद्य संस्थान, अछोटी में महासमुंद जिले के 15 प्राथमिक विद्यालय व दुर्ग जिले के 15 प्राथमिक विद्यालयों में पदस्थ शिक्षकों हेतु 10 दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 07 दिन शिविर की विषयवस्तु पर व 03 दिन प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम पर चर्चा की गई जिसमें शिविरार्थियों ने पाठ्यक्रम की उपादेयता को स्वीकार किया। ये वे 30 विद्यालय हैं जहाँ कक्षा 1 से 5 तक बने चेतना विकास मूल्य शिक्षा पाठ्यपुस्तक का क्षेत्र परीक्षण किया जाना है।

जीवन विद्या शिविर : जनभागीदारी द्वारा

- महासमुंद जिले के संकुल स्रोत केन्द्र खट्टा में संकुल समन्वयक ओमनारायण शर्मा तथा समुदाय के सहयोग से 11 मई 2009 से 17 मई 2009 तक 7 दिवसीय आवासीय जीवन विद्या शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 14 विद्यालयों के 23 शिक्षक व 44 ग्रामवासी उपस्थित हुए।
- धमतरी जिले के संकुल स्रोत केन्द्र धौंराभाठा में 8 से 12 जून 2009 तक ग्रामवासियों के सहयोग से 5 दिवसीय जीवन विद्या शिविर आयोजित किया गया जिसमें 67 ग्रामवासी सहित संकुल के 35 शिक्षक उपस्थित हुए।

जीवन विद्या के लोकव्यापीकरण में लगी अन्य संस्थाएं

- आई.आई.टी. दिल्ली एवं कानपुर में छात्रों को चेतना विकास मूल्य शिक्षा का परिचय दिया जाता है।
- आई.आई.आई.टी. हैदराबाद में यह नियमित पाठ्‌यक्रम में है।
- सोमैया विद्या विहार, मुंबई में 2007 से इसका पृथक प्रकोष्ठ गठित कर विभिन्न संकायों के लगभग 27000 छात्रोंको इसका परिचय दिया जाता है।
- उत्तरप्रदेश के टेक्निकल यूनिवर्सिटी के लगभग 460 इंजीनियरिंग कालेजों में यह नियमित पाठ्‌यक्रम में है।
- सिद्ध संस्थान मसूरी,उत्तरांचल में इसके प्रकाश में पुस्तक लेखन, परिचय शिविर एवं स्वावलंबन विद्यालय संचालित है।
- प्रत्येक वर्ष आयोजित होने वाले राष्ट्रीय सम्मेलन के कम में इस वर्ष 14 वां सम्मेलन हैदराबाद में होगा जहां देश के विभिन्न क्षेत्रों से आए हुए प्रतिनिधि जीवन विद्या पर साल भर में हुई प्रगति की समीक्षा करते हुए भावी कार्यक्रमों का निर्धारण करेंगें। छत्तीसगढ़ में हो रहे प्रयासों पर देश के अन्य क्षेत्रों में काफी उत्सुकता है।

भावी कार्यक्रम

- मूल्य शिक्षा को बच्चों तक पहुंचाने के उद्देश्य से कक्षा 1 से कक्षा 10 तक चेतना विकास मूल्य शिक्षा आधारित पाठ्यक्रम तैयार किया जाना है।
- प्रदेश के 30 प्राथमिक विद्यालय जिसमें दुर्ग जिले के 15 व महासमुंद जिले के 15 प्राथमिक विद्यालय शामिल हैं, इन्हें चेतना विकास मूल्य शिक्षा पाठ्यक्रम का क्षेत्र परीक्षण हेतु चयन किया गया है।
- चयनित प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों को चेतना विकास मूल्य शिक्षा से पारंगत कर विद्यालयों में कक्षा 1 से कक्षा 5 तक पाठ्यपुस्तक प्रदाय कर क्षेत्र परीक्षण का कार्य किया जाएगा।

- क्षेत्र परीक्षण उपरांत प्राप्त परिणाम के आधार पर प्रदेश के सभी विद्यालयों में कक्षा 1 से कक्षा 10 तक पाठ्यक्रम प्रारंभ किया जावेगा।

- शिक्षकों के अलावा प्रत्येक गांव में गठित शाला प्रबंधन एवं विकास समिति के सदस्यों को जीवन विद्या में पारंगत करना, इस हेतु उनके लिए आवासीय शिविरों का आयोजन करना।

- चेतना विकास मूल्य शिक्षा में समाज के अधिक से अधिक लोगों को पारंगत करने तथा उनकी प्रभावी भूमिका के लिए विद्यालयों में पालक अभिप्रेरणा प्रकोष्ठ गठित करना।

- प्रदेश के सभी जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में शिक्षक अभिप्रेरणा प्रकोष्ठ स्थापित कर ''जीवन विद्या'' में पारंगत कम से कम 2 प्रबोधक नियुक्त करना।

- प्रदेश के सभी विकासखण्डों में कम से कम चार प्रबोधक तैयार करना जो सभी संकुलों में पहुंचकर प्रबोधन कार्य कर शिक्षकों को मूल्य शिक्षा में पारंगत करेंगे।

- प्रदेश के समस्त शिक्षकों को ''जीवन विद्या'' में पारंगत करना तथा ऐसे शिक्षकों के माध्यम से विद्यालयों में पाठ्यक्रम को प्रभावी ढंग से बच्चों तक पहुंचाना।

धन्यवाद.....